अध्याय 9

इंग्लैंड-मार्ग से भारत-प्रस्थान

अफ्रीका में बैरिस्टर गांधी की सार्वजनिक कार्यों के कारण काफी प्रसिद्धि हो गई थी। देश-विदेश की शिक्षित जनता उनके नाम से परिचित ही नहीं हो गई थी, उनके प्रति आदर भी रखने लगी थी।

गांधीजी अपनी पत्नी और जर्मन मित्र मिस्टर केलेन बेक के साथ इंग्लैंड के लिए जहाज से रवाना हो गए। उनके पास यद्यपि तीसरे दर्जे का टिकट था, फिर भी जहाज के कप्तान ने उन्हें विशेष सुविधाएँ दे रखी थीं। उन्हें ताजे फल और मेवे दिए जाते थे, जो आमतौर से तीसरे दर्जे के यात्री को नहीं दिए जाते। डर्बन से इंग्लैंड की सत्रह-अठारह दिन की यात्रा थी। इस यात्रा का एक रोचक प्रसंग दो मित्र का वाक्-युद्ध था।

केलेन बेक को दूरबीन का बड़ा शौक था। एक दिन वे कीमती दूरबीन लेकर सुदूर का दृश्य देखने का सुख ले रहे थे। गांधीजी अपने मित्र से कहने लगे, 'देखो केलेन बेक, जिस आदर्श को हम लोग अपनाए हुए हैं, कीमती दूरबीनों का रखना उनके अनुरूप नहीं है।' केलेन बेक गांधीजी की बात को समझते तो थे, पर वे दूरबीन का मोह छोड़ नहीं पा रहे थे। एक बार जब दोनों मित्र केबिन के पास खड़े थे, तब उनमें फिर से बहस छिड़ गई। गांधीजी बोले- 'यह दूरबीन ही मित्र हम दोनों के बीच झगड़े की जड़ है। बेहतर हो कि आप इसे समुद्र में फेंक दें।'

'ज़रूर फेंक देना चाहिए' कहकर केलेन बेक ने गांधीजी के हाथों में दूरबीन पकड़ा दी। गांधीजी ने बिना सोच-विचार के दूरबीन समुद्र में फेंक दी। वह उछलती-कूदती लहरों में विलीन हो गई। दोनों का विवाद भी उसी में विलीन हो गया।

जिस समय गांधीजी इंग्लैंड पहुँचे, उस समय यूरोप में युद्ध छिड़ा हुआ था। इंग्लैंड में वे मुख्यत: गोखले से मिलने आए थे परन्तु उस समय वे इंग्लैंड में नहीं पेरिस में थे। गांधीजी ने इंग्लैंड में रहने वाले भारतीयों की एक सभा बुलाई और उनसे युद्ध में अंग्रेजों का साथ देने का आग्रह किया। कुछ वक्ता गांधीजी की इस सलाह से सहमत नहीं थे। वे शत्रु की विपत्ति से लाभ उठाकर अपने देश को स्वतंत्र कराना चाहते थे। गांधीजी को यह दलील पसन्द नहीं थी। वे आपत्ति के समय अंग्रेज़ों से सौदेबाजी करना उचित नहीं समझते थे। अत: युद्धकाल तक उन्होंने अपनी माँगों को स्थगित रखने का निश्चय प्रकट किया।

जिस प्रकार गांधीजी ने अफ्रीका में बोअर-युद्ध में घायलों की सेवा-सुश्रुषा के लिए स्वयंसेवकों की टोली बनाई थी, वैसी ही यहाँ भी भारतीय स्वयंसेवकों की टोली 'इंडियन एंबुलेंस कॉप्स' तैयार की। ब्रिटिश सरकार ने उनकी सेवा को साभार स्वीकार किया।

इंग्लैंड में गांधीजी पसली के दर्द से बीमार हो गए। उनकी बीमारी मित्र की चिन्ता का विषय बन गई। वे उस

समय मूँगफली, कच्चे और पके केले, नींबू, जैतून का तेल, टमाटर, अंगूर आदि का सेवन कर रहे थे। दूध, अनाज बिल्कुल नहीं लेते थे। डॉक्टरों ने उनसे अनाज लेने का बहुत आग्रह किया। उनके गुरु गोखले जी ने भी डॉक्टरों की सलाह का समर्थन किया और उनसे बार-बार अन्न ग्रहण करने को कहा। गांधीजी दुविधा में पड़ गए – गुरु की आज्ञा मानूँ या अन्तरात्मा की। उन्होंने अन्तरात्मा की बात मानी और अन्न ग्रहण नहीं किया। फलाहार से धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य सुधरने लगा और वे स्वदेश की ओर रवाना हो गए। मिस्टर केलेन बेक भी गांधीजी के साथ भारत आने वाले थे, परन्तु जर्मन होने के नाते भारत सरकार ने उन पर रोक लगा दी, क्योंकि महायुद्ध में जर्मन ब्रिटेन का शत्रु था।

जहाज में तीसरा दर्जा न होने से गांधीजी ने दूसरे दर्जे में यात्रा की। यात्रा में भी फल और मेवे का सेवन किया। इससे उनके स्वास्थ्य में बहुत कुछ सुधार हो गया। डॉक्टरों ने छाती पर जो पट्टी बाँध दी थी और उसे बँधी ही रखने की सलाह दी थी, वह उन्होंने दो दिन में ही निकाल फेंकी। डॉक्टरी चिकित्सा पर उनकी बिल्कुल आस्था नहीं थी। उसके प्रति अनास्था का भाव आजीवन बना रहा।

अभ्यास

प्रश्न-1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. गांधी जी अपनी पत्नी और जर्मन-मित्र .....के साथ इंग्लैंड जहाज से रवाना हुए।
2. इंग्लैंड में गांधी जी .....के दर्द से बीमार हो गए।
3. डॉक्टरी चिकित्सा पर गांधी जी की.....बिल्कुल नहीं थी।

प्रश्न-2 निम्नलिखित लघुत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. गांधीजी और केलेन बेक के बीच झगड़े की जड़ कौन-सी वस्तु थी और क्यों?
2. इंग्लैंड में गांधीजी ने भारतीयों से युद्ध में अंग्रेज़ों का साथ देने के लिए क्यों कहा?
3. भारत सरकार ने केलेन बेक को गांधीजी के साथ क्यों नहीं आने दिया?
4. गांधीजी ने अपना इलाज कैसे किया?

अब करने की बारी

1. 'हमारे महापुरुष-महात्मा गांधी' विषय पर एक निबंध लिखिए।
2. ''फलों का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है।'' उक्त विषय पर एक एलबम तैयार करें जिसमें विभिन्न फलों के चित्रों को चिपकाकर अथवा बनाकर उस फल के गुणों का वर्णन करें।

❑❑